उन्हें सामग्री चयन में कम समय लगे। यह प्रयत्न करना चाहिए चुनाव का कौशल व विवेक भी आवश्यक है। इसके साहित्य पर की अध्ययन करने विधि के आधार पर यदि आवश्यकता होने पर इनका आकलन, विस्तार भी कर सकता है।

निर्देशक का चुनाव : विश्वविद्यालयों के शोधविभागों और संस्थानों में निर्देशक कुछ औपचारिक योग्यताओं के आधार पर निश्चित होते हैं जब शोधार्थी इनमें प्रवेश करता है। तब उनके सामने निर्देशक के चुनाव का प्रश्न आता है यहाँ दो स्थितियाँ हो सकती हैं।

(क) **विषय के अनुसार निर्देशक का चुनाव**

(ख) **निर्देशक के अनुसार विषय का चुनाव**

इसमें पहली स्थिति आदर्श स्वरूप है क्योंकि इस स्थिति में शोधार्थी की स्वतन्त्रता एक सीमा तक बनी रहती है। विषय के चुनाव के साथ ही निर्देशक का कार्य भी आरम्भ होता है।

विश्वविद्यालय में वस्तुस्थिति कुछ इस प्रकार होती है कि एक निर्देशक के निर्देशन में कार्य करने वाले शोधार्थियों की संख्या निश्चित होती है। संकट तब आता है जब शोधार्थी की रुचि के विषय से सम्बद्ध निर्देशक के पास पहले से ही भरी है। इस स्थिति में या तो शोधार्थी को अपने कार्य का परिवर्तन करना होगा या शोध कार्य स्थगित करना पड़ेगा।

निर्देशन की विभिन्न स्थितियाँ :-

समस्या का चुनाव : समस्या के चुनाव का दायित्व मुख्यतः शोधार्थी का ही है किन्तु व्यावहारिक रूप से चुनाव की प्रक्रिया के लिए भी निर्देशक आवश्यक, सम्पर्क करता है। निर्देशन का स्वरूप इस स्थिति में [illegible]

शीघ्र शीघ्र किसी अनस्या का सुझाव दे दें।
दूसरा मार्ग यह भी हो सकता है। कि निर्देशक शोधार्थी से सम्बंधित शोध की कुछ समस्याओं की सूची उसके सामने रख दे। और शोधार्थी को उस सूची में निर्वाचन का अवसर दे।
इसके विपरीत निर्देशक शोधार्थी से ही उसकी रुचि विषयों की सूची स्वयं मांग सकता है। इसके पश्चात् शोधार्थी को यह सुविधा मिलनी चाहिए कि वह सब में उचित परिवर्तन कर सके। चाहे समस्या किसी प्रकार की हो निर्देशक का दायित्व यह है। कि वह समस्या का अंकलन होने दे। उसको परिसीमित करने का कार्य उसका ही निर्देशक का एक और कार्य यह है कि उस समस्या को उचित शब्दावली में ढालकर प्रबंध के शीर्षक का नाम देने में सहायता करें।

योजना या रूपरेखा बनाना : समस्या के निर्धारण के पश्चात् शोधार्थी को कार्य की योजना का प्रारूप तैयार करना होता है। उसकी आवश्यक योजना भी करनी चाहिए। इस स्थिति में भी की आवश्यकता होती है यह निर्देशन का क्रम इस प्रकार हो सकता है। 1- शोध के अंग और उसके सम्भावित विषय के सम्बंध में शोधार्थी के साथ विचार विमर्श।
2- उस विचार विमर्श के प्रकाश में शोधार्थी के द्वारा योजना तैयार करना।
3. उस योजना में आवश्यकतानुसार संशोधन करना। इसमें से निर्देशक की कार्यप्रणाली पर संक्षेप में विचार किया गया है। स्वभावतः से निर्देशक को ऐसा होना चाहिए कि शोधार्थी के द्वारा उठाई हुई समस्याओं और ऐसा समाधान दे कि शोधार्थी संतुष्ट हो सके।

Scanned with CamScanner